CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

स्वामी केशवानन्द और डा. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन

मनीराम

शोधार्थी, शिक्षा विभाग

डॉ. प्रीती ग्रोवर

सह आचार्य, शिक्षा विभाग
टांटिया विश्वविधालय, श्रीगंगानगर
Email- butter27ff@gmail.com, Mob- 9461564217

First draft received: 16.10.2024, Reviewed: 27.10.2024, Final proof received: 15.11.2024, Accepted: 15.12.2024

सार-संक्षेप

समाज सुधारक स्वामी केशवानन्द जी ने मरूस्थल में प्रचलित मृत्यु भौज, अनमेल विवाह, बाल–विवाह, नारी उत्पीडन, पर्दाप्रथ एवम नशा सेवन आदि समाज के गरीबों और कष्टों में डालने वाली बुराईयों का विरूद्व किया स्वामी जी ने ग्रामीण अंचल में व्याप्त अन्धविश्वासों और अर्थहीन रूढियों को जडे से खोदने के लिए केशवानन्द ने आवश्यक समझा।

डा0 भीमराव अम्बेडकर अगांध ज्ञान के भण्डार, अदभुत प्रतिभा के धनी समाज सुधारक , संविधान शिल्पी और राजनीतिज्ञ थे। अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज मे सुधार के लिए समार्पित था। अस्पृश्यों तथा दलितों के वे मसीहा थे। उन्होने अपने विरूद्व होने वाले अत्याचारों शौषण अन्याय तथा अपमान से संघर्ष करने के लिये शिक्षा रूपी शक्ति दी। डा0 भीमराव अम्बेडकर जी के द्वारा किये गये कार्यो के कारण उन्हे भारत का अब्राहम लिंकन और माटिंन लूथर कहा गया है।

मुख्य शब्द : *शैक्षिक विचार, समाज सुधारक , संविधान शिल्पी, राजनीतिज्ञ आदि.*

स्वामी केशवानन्द के शैक्षिक विचार

स्वामी केशवानन्द जी का मानना था कि शिक्षा का कोई ना कोई उद्देश्य आवश्यक होता हैं। इसलिए शिक्षा को सौद्वदेश्य प्रक्रिया कहा गया है। इस प्रकार शिक्षा का प्रत्येंक उद्देश्य जीवन के उद्देश्य पर आधारित होता है। और जीवन का उद्देश्य दर्शन से प्रभावित होता है। इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण जीवन के उद्देश्य अथाव जीवन दर्शन के अनुसार ही होता है।

दार्शनिक अपनी अपनी विचारधारों अथवा देश की आवश्यकताओं के अनुसार समय समय पर जी के उद्देश्य को निर्धारित करते है। जैसे– जैसे जीवन के उद्देश्यों में परिवर्तन आता हैं वैसे वैसे शिक्षा के उद्देश्य भी बललते रहते है। सही बात स्वामी जी के शिक्षा दर्शन पर भी लेकर होता है।

स्वामी जी लिखते है कि हमारी शिक्षा का परम उद्देश्य जीवन में उत्साह कार्यद्वक्षता तथा नम्रता उत्पन्न करना है। उन्हे क्लर्क या बाबू बनाना नही शिक्षा का उद्देश्या मनुष्य को आशावादी धर्मशाली और कर्मठ कार्य करने में साक्षर और पराधीन जीविका कमाने के लिए तैयार करने का यात्रा नही है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचार

डॉ. अम्बेडकर भारत माता के ऐसे प्रभावशाली मेघावी एवं यशस्वी सपूत रहे है। जिनकी अप्रतिम सेवाओं के लिये चिरकाल तक यह देश ऋणी रहेगा। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के अनुसार अछूत परिार में जन्म लेकर भी अध्ययन के लिये आवश्यक सुविधाओं से वंचित रहते हुये तथा बचपन से ही अपमान, तिरस्कार और घृणा के घूट पीते हुये एम.ए.पीएच. डी., एम.एस.सी, डी.एस.सी. डी.लिट जैसी शिक्षा की उच्चतम उपाधियॉ प्राप्त करना उनके अदम्य साहस , लगन निष्ठा , धैर्य और शिक्षा के प्रति गहनतम लगाव महत्वपूर्ण उदाहरण है। अपने जीवन में उन्होने जा भी उपलब्धि प्राप्त की थी वह शिक्षा के बल पर ही प्राप्त की थी। इसलिये उन्होने हर प्रकार के विकास के लिये शिक्षा को एक अमोधा अस्त्र बताया तथा शिक्षा को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना है।

डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा ही एकता , बन्धुता और देशप्रेम के विवेके को जन्म देती है। सभ्यता और संस्कृति का भवन शिक्षा के स्तम्भ पर ही बनता है। शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करती है। तथा शिक्षा के अभाव में मानव पशुतुल्य होता है। बाबा साहब ने कहा है कि शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पियेगा वही दहाडेगा और उन्होने शिक्षा को समाजिक समरसता व व्यक्ति में सात्विक गुणों का विकास करने वाली बताया है।

डॉ. अम्बेडकर जी भारत के शिल्पकार के साथ–साथ एक महान शिक्षक भी थे। उनका मानना था कि शिक्षा से ही ज्ञान का ताला खुलता है। वे शिक्षक को राष्ट्र निर्माता मानते थे शिक्षक के सम्बन्ध में उन्होने कहा है कि शिक्षक ज्ञान पिपासु अनुसंधान करने वाला व आत्म विश्वासी होना चाहिये । उनका मानना था कि शिक्षा क बिना कोई भी समाज आगे नही बढ सकता है। अंध विश्वासों से मुक्ति , अज्ञानता , अन्याय और शोषण के विरूद्व ललकारने की ताकत भी शिक्षा से ही संभव है। भारत सैकडों वर्षो तक विदेशी सत्ता , शासकों के पराधीन रहा, जिससे भारत में पतन और अवनति का दौर अनंतकाल तक चलता रहा और बाबा साहब यह मानते थे कि देश की इस पराधीनता का कारा शिक्षा भी है और मुख्यतः महिला शिक्षा का न होना ।इसलिये उन्होने स्त्री शिक्षा पर भी बहुत बल दिया और विशेषकर दलित मंहिलाओं की शिक्षा पर अधिक बल दिया । उनका स्पष्ट मत था कि यदि दलित समाज की महिलायें शिक्षित होगी तो वे अपनी संतानो को भी शिक्षित व संस्कारवान बना सकती है। डॉ अम्बेडकर जी ने अनुसूचित वर्ग की शिक्षा की भी वकालत की उनका मानना था कि अनुसुचित वर्ग के माथे पर लगे अज्ञानता के टीके और समाज में फैली उनकी दुर्भावना से निकलने का एक ही मार्ग था कि वे पढ़ लिखकर अपनी मुक्ति का रास्ता प्रशस्त करें। इसलिये वह अनूसूचित समाज के उद्वार में शिक्षा को एक बड़ा मानते थे। बाबा साहब के शिक्षा सम्बन्धी विचार देश, काल , परिस्थितिशें में प्रासंगिक थे अपितु हर काल समय अथवा आज भी उतने ही समीधीन है। उनके द्वारा दिया गया मन्त्र शिक्षित बनों संघर्ष करों , संगठित रहों मैं ही उनके संघर्षपूर्ण जीवन का व उनके शैक्षिक विचारों का सारांश है बाबा साहब ने न केवल अनुसूचित समाज की शिक्षा पर बल दिया बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ सभी महिला व पुरूषों के समान शिक्षा की भी स्पष्ट बात की।

उनका जीवन को पुनः चलायमान रखना है तो उसकों शिक्षित होना ही होगा।

कैशवानन्द के सामाजिक विचार

स्वामी केशवानन्द का मानना था कि एक प्रगतिशील समाज ही एक उच्चअर्थव्यवस्था का धारक होता है। और प्रगति शिक्षा या ज्ञान से आती है। और ज्ञान प्राप्ति से समाजिक कुप्रथाओ से मुक्ति मिलेगी। स्वामी जी ने समाज की प्रत्येक समस्या व कुप्रथा को दूर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वामी जी पर महात्मा गॉधी के जीवन चारित्र का व्यापक प्रभाव था। वे गॉधी जी की सरल जीवन से शैली के कायल थे और समाज में लोगो के उस जीवन शैली को अपने की उपेक्षा करते थे। गॉधी जी का मानना था कि मनुष्य को दिखावा या विलासिता को परित्याग करके सरल जीवन को अंगीकार करना चाहिऐ। स्वामी केशवानन्द ऐसी समाजिक व्यवस्था के पक्षधर थे। जो नैतिक मुल्यों पर आधारित, व्यसन मुक्त, अपव्ययुक्त और समस्त जन के कल्याण से उत्प्रेरित हो। स्वामी केशवानन्द जीवन प्रयंन्त समाज की समस्याओं और दूरव्ययस्थाओं को कम करने का प्रयास करते रहे।

समाज सुधार का कार्य एक जन सेवक ही कर सकता है। जनसेवा एक दुरुह कार्य है और जनसेवक बनना तपस्या व साधना का कार्य है। स्वामी केशवानन्द का कहना हैं कि जिस तरह स्वर्ण को छेदने से , तपाने से पीटने से घिसने से उसकी परीक्षा होती है। उसी प्रकार जनसेवक की त्याग व गुण से शील से और क्रियाशीलता कार्य क्षमता से परीक्षा होती है।

डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचार

अम्बेडकर जी सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिये समर्पित था। अस्पृश्यों व दलितों के वे मसीहा थे। उन्होने सदियों से पद–दलित वर्ग को सम्मानपूर्वक जीने के लिये एक सुस्पष्ट मार्ग दिया। उनके अनुसार सामाजिक प्रताड़ना राज्यों द्वारा दिये जाने वाले दण्ड से भी कहीं अधिक दुःखदायीं है उन्होने प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का विशद अध्ययन कर यह बताया कि भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा तथा अस्पृश्यता का प्रचलन समाज में कालान्तर में आई विकृतियों के कारण उत्पन्न हुयी है, न कि यह यहॉ के समाज में प्रारम्भ से ही विद्यमान थी। उन्होने वर्ग पर होने वाले अन्याय का विरोध ही नहीं किया अंपितु उनमें आत्म–गौरव स्वावलम्बन, आत्मविश्वास , आत्मसुधार तथा आत्मविश्लेषण करने का शक्ति प्रदान की। डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय आर्योके सामाजिक संगठन का आधार रही चातुर्वर्ण व्यवस्था का विरोध किया तथा उसकी कटु आलोचना की उनके अनुसार यह विभाजन श्रम के विभाजन पर आधारित ने होकर श्रमिकों के विभाजन पर आधारित था। उनका मत था कि उन्नत तथ कमजोर वर्गो में जितना संघर्ष भारत में है वैसा विश्व के सिकी अन्य देश में नही है। डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था के बारे में यह स्पष्ट किया कि यह भारतीय समाज कि लिये बहुत ही घातक है। उनके अनुसार जाति व्यवस्था ने केवल हिन्दू समाज में प्रचलित अस्पृश्यता को अन्यायपूर्वक मानते हुये उसका प्रबल बिरोध किया उनका दृष्टिकोण था कि यदि हिन्दू समाज का उत्थान करना है तो अस्पृश्यता का जड़ से निराकरण आवश्यक है। उन्होने अस्पृश्यता निवारण के लिये सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक नैतिक व शैक्षणिक आदि स्तरों पर रचनात्मक कार्यक्रम तथा संगठित अभियान का आग्रह किया ।उनका मानना था कि हिन्दू समाज में स्वतंत्रता समानता तथा न्याय पर आधारित व्यवस्था स्थापित करने के लिये कठोर नियमों मे संशोधन आवश्यक है। वह जातीय बंधन को समाप्त करने के समर्थक थे। उन्होने स्वंय अन्तजातिय विवाहों तथा सहभोजों को प्रोत्साहित किया । वे दलितों में शिक्षा केप्रसा को महत्वपूर्ण मानते थे, वह उन्हे केवल औपचारिक शिक्षा देने की नहीं बल्कि अनौपचारिक शिक्षा की भी बात करते थे।

शोध के उददेश्य

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा जाति वर्ण में भेदभाव को मिटाने के प्रयासों के बारे में अवगत करवाना।

शिक्षा के क्षेत्र में एक महान विभूति के रूप में अम्बेडकर के जीवन दर्शन को प्रदर्शित करना।

सन् 1947 में भारत–पाकिस्तान विभाजन के दौरान किए गए अमूल्य योगदान को प्रकाश में लाना।

विभिन्न देशों के कानूनों को संकलित कर भारतीय सविधान निर्माण के कार्यो के बारे में वर्तमान पीढी को समझ देना।

स्वामी केशवानन्द के सम्पूर्ण जीवन क्रमबद्व एवम् तथ्यात्मक चित्रण प्रस्तुत करना।

राष्ट्रीय आंदोलन तथा राष्ट्रीय जागृति में स्वामी केशवानन्द की भूमिका का मूल्यांकन करना।

स्वामी केशवानन्द के समाज–सुधार कार्यो का समीक्षात्मक अध्ययन करना तथा नारी उत्थान के कार्यो में उनकी भूमिका का समीक्षात्मक मूल्यांकन राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मेंउनके कार्यो का अवलोकन करना।

साम्प्रदायिक– सौहार्द्र तथा दलित वर्ग के उत्थान में स्वामी केशवानन्द के कार्यो की समीक्षा करना।

स्वामी केशवानन्द में जीवन दर्शन के अनुरूप गांवो का उत्थान करना व समाज कल्याण हेतू कार्य करना।

सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक व शैक्षिक और नैतिक उत्थान द्वारा गांव के सवांगीर्ण विकांस के लिए प्रेरणा देना।

समाज में सामाजिक कुरीतियों का निवारण गरीबी उन्नूलन नारी शिक्षा उत्थान नशामुक्ति दहेज बहिष्कार व शिक्षा तथा हिंदी के प्रचार प्रसार में केशवानन्द के योगदान के बारे में अवगत करवाना।

स्वतत्रता आदोलन में अन्य स्वतत्रता सेनानियो के साथ स्वामी जी ने बढचढ कर भाग लिया और इस प्रकार देश सेवा के बारे में अवगत करवाना।

स्वामी केशवानन्द द्वारा शिक्षा में क्षेत्र मे किए गए विभिन्न प्रयासो व उनको सफल बनाने हेतू किए गए ट्रक्ट निर्माण के बारे में अवगत करवाना।

विभिन्न संधर्षो से रूबरू होकर महान सोच के साथ जीवनयापन करने की सोच विकसित करना।

हिन्दी भाषा के प्रति केशवानन्द द्वारा किए गए विभिन्न कार्यो ने बारे में अवगत करवाना।

उत्तर भारत में शिक्षा संत का दर्जा प्राप्त स्वामी केशवानन्द का समस्त भारत में शिक्षा के प्रचार प्रसार को विभिन्न प्रयासो के बारे में परिचित करवाना।

शोध विधि

शोध कार्य के लिए अध्ययन विधि एक संरचना और ब्यूह रचना तैयार करती है। जिसमें शोध किया जाता है प्रस्तुत अध्ययन में मूल रूप से स्वामी केशवानन्द तथा डा0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और दर्शन पर आधार पर शिक्षा के स्वरूप उदेश्य शिक्षा पद्वतियॉ आदि प्रस्तुत करने हेतू नियोजित किया जाएगा। प्रस्तुत अध्ययन में स्वामी केशवानन्द और डा0भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारो का अध्ययन करना था। इसलिए उनकी यात्रा अतीतकाल से लेकर वर्तमान की प्रांसगिकता तक है। अतः अतीत के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक विधि का जबकि वर्तमान प्रांसगिकता के लिये वर्णनात्मक विधि का सहारा लिया जाऐगा। अम्बेडकर और केशवानन्द से सम्बन्धित साहित्यिक स्त्रातों, सामाजिक व राजनेतिक और व्यावहारिक के बारे में जानकारी एकत्रित की जायेगी विभिन्न पुस्तको, आत्मकथा ,तथा प्रतिवेदनों के माध्यम जानकारी एकत्रित कर शोध कार्य पूरा किया जायेगा।

निष्कर्ष

स्वामी जी मानते थे कि भारते के पिछड़ा राष्ट्र होने के लिए अशिक्षा सर्वदिधक कारण है। स्वामी केशवानन्द अपने सम्पूर्ण जीवन काल में शिक्षा प्रसार के कार्य को प्रमुख माना उनका कहना था – कि अनपढ़ संतान और पशु में अन्तर नही है। स्वामी केशवानन्द ने शिक्षा के द्वार सभी लोगो के लिए खोले विशेषकर ग्रामीण अंचल में रहने वाले लोगो का शिक्षा के प्रति जगरूक किया । स्वामी जी बिना भेदभाव के लिए समतामुलक समाज की स्थापना पर बल दिया तथा गरीबो और दलित के लिए विधालय का निर्माण किया डा0 अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षित बनाने और स्वाभिमानी में बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। देश की अखण्डता के लिए देशप्रेम का होना आवश्यक है। जिसकी नींव शिक्षा ही है। शिक्षा से समानता के अवसर होने से मानवीय मुल्यों की स्थापना होती है। नारी को सम्मान दिलवाने का श्रेय डा0 भीमराव अम्बेडकर को जाता है।

भावी शोधकर्ताओं हेतू सुझाव

वर्तमान शोध प्रबन्ध में स्वामी केशवानन्द एवं शिक्षाविद् डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा के सैद्वान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों को समयाभाव एवं साधन की कमी के कारण सीमित रूप में ही प्रस्तुत किया गया है। स्वामी जी विचार में डा0 भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा सम्बन्धी विचारों और अधिक अध्ययन किया जा सकता है। केशवानन्द और डा0 भीमराव पर ही अभी तक समुचित कार्य नही हुआ है। उनके सामाजिक , सांस्कृतिक, राजनैतिक , धार्मिक दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना भी शिक्षा सम्बन्धी विचारों को समझने के लिए आवश्यकत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा , हरिप्रकाश (2007) ,बौद्वज्ञान– मीमांसा, परिमल पब्लिककेशन , नई दिल्ली।

संधमित्रा, कंचन शिला (2022) बुद्व धर्म दर्शन की डा0 अम्बेडकर कृत व्याख्या।

सिंह राम गोपाल (2002) डा0 अम्बेडकर का विचार दर्शन, माध्यम प्रदेश हिन्दी ग्रथ अकादमी भोपाल, पृष्ठ संख्या 19

सिंह परमान्द एवं कुमार, प्रमोद (2005) डा0 आम्बेडकर और एक मनुवादी विश्लेषण , कल्पाय पब्लिककेशन्स , नई दिल्ली।

स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन समारोह भाषण, संगरिया मार्च 1958 पृष्ठ संख्या 04

स्वामी केशवानन्द पेपरस डा0जाखड़, बलराम विधा भास्कर, रामावतार,बालगीत अबोहर 1962

स्वामी केशवानन्द का पत्र जुगल किशोर बिडला को आदिनाकित ग्रामोत्थान विधापीठ रिकॉर्ड संगरिया ।

सिंह, तमन्ना, (2008) स्वामी केशवानन्द के राजनैतिक सामाजिक तथा शैक्षिक योगदान 1883–1972